**डॉ० शैलेन्द्र मोहन मिश्र**

**स० प्रा० मैथिली विभाग**

**सी० एम० जे० कॉलेज**

**दोनवारीहाट खुटौना मधुबनी**

**मो० न०9546743796**

**Email-** **mishrasm966@gmail.com**

**B. A. III**

 **रसक भेद**

**6 भयानक रस : -**

 **भयंकर अनिष्टकारी दृश्यक दर्शन , श्रवण एवं स्मरण अथवा बलशाली व्यक्ति द्वारा कएल गेल अपराध कार्यसँ भयानक रस संचरित होइत अछि |**

1. **स्थायीभाव – भय |**
2. **विभाव - ( क ) आलंबन – स्त्री , नीच मनुष्य , व्याघ्रादि हिंसक जंतु , श्मशान , भूत – प्रेतादि | ( ख ) उद्दीपन – आलंबनक भयानक चेष्टा , भयानक निर्जनता |**
3. **अनुभाव – मुख वैवर्ण्य ,स्वर भेद , कंप , कारुणिक रुदन , रोमांच आदि |**
4. **संचारीभाव - त्रास , जुगुप्सा , शंका , चिंता , मूर्च्छा , आवेग , दैन्य , मोहादि |**
5. **गुण - ओज |**
6. **रीति - गौड़ी |**
7. **वृत्ति - पुरुषा |**
8. **सहचर – अद्भुत , करुण , एवं वीभत्स |**
9. **विरोधी रस – श्रृंगार , हास्य , वीर , रौद्र , शांत एवं वात्सल्य |**

**7 अद्भुत रस;-**

 **दिव्य जनक दर्शन , अभिलषित मनोरथ प्राप्ति , विमान , इंद्रजाल आदि विस्मयकारी वस्तु कें देखला सँ अद्भुत रसक उत्पत्ति होइत अछि |**

1. **स्थायीभाव - विस्मय |**
2. **विभाव - ( क ) आलंबन - अलौकिक , विचित्र दृश्य वा वस्तु | ( ख ) उद्दीपन - विस्मयजनक वस्तुक विराट स्वरूप , गुण एवं प्रभावक भास् , कथन , श्रवण एवं दर्शन |**
3. **अनुभाव – नेत्रक विस्फारण , स्तम्भ , स्वेद , रोमांच , संभ्रम , उत्फुल्लतादि |**
4. **संचारीभाव – भ्रान्ति , वितर्क , आवेग , जड़ता , दैन्य , शंका |**
5. **गुण – प्रसाद |**
6. **रीति - पान्चाली |**
7. **वृत्ति - कोमला |**

**सहचर रस - श्रृंगारादि समस्त रस |**

**8 वीभत्स रस :-**

 **रुधिर , मांस , नैतिक पतन आदि घृणित वस्तु सभकें देखि वा सुनि उत्पन्न भेल घृणा वा जुगुप्सासँ वीभत्स रसक संचार होइत अछि | वीभत्स दृश्य कें देखलासँ संसारक असारता एवं असत्यताक आभास भेटैत अछि | दर्शकगणक हृदयमे ओहि कालमे संसार सँ विरक्ति भए जाइत अछि| विरक्तिक दिस प्रवृत्त करबाक कारणें वीभत्स रस शान्ति रसक सहायक मानल गेल अछि |**

1. **स्थायीभाव – घृणा वा जुगुप्सा |**
2. **विभाव - ( क ) आलंबन - घृणोत्पादक प्राणी वा पदार्थ , रक्त , श्मशान , मांस | ( ख ) उद्दीपन – दुर्गन्ध , कुत्सित रूप , मांस – भक्षण , आहत जीवक चीत्कार |**
3. **अनुभाव - मुँह फेरब , नाक मूनब , नेत्र संकोच , थूक फेकब , आलोचना करब |**
4. **व्यभिचारी भाव – निर्वेद , ग्लानि , जड़ता , व्याधि , अपस्मार , वैवर्ण्य , चिन्तादि |**
5. **गुण – ओज एवं प्रसाद |**
6. **रीति - गौड़ी एवं लाटी |**
7. **वृत्ति - पुरुषा एवं कोमला |**
8. **सहचर रस – हास्य , अद्भुत , करुण , वीर , भयानक , शांत |**
9. **विरोधी रस – श्रृंगार एवं वात्सल्य |**